राज्य सभा में **" मोबाइल-फोन से होने वाले विकिरणन के प्रभाव के संबंध में जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय द्वारा किये गये अध्ययनों संबंधी प्रतिवेदन "** के बारे में दिनांक 06.12.2013 को पूछे जाने वाले तारांकित प्रश्न सं0 26 के भाग (क) से (ग) के संबंध में सभा-पटल पर रखा जाने वाला विवरण।

(क) से (ग) : हाल ही में पर्यावरणीय विज्ञान विद्यालय (स्कूल ऑफ इनवायरनमेंटल साइंसिज) जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय ने मोबाइल फोन विकिरणन से होने वाले प्रभाव के बारे में दो समीक्षाएं प्रकाशित की हैं। दोनों समीक्षाएं जानवरों पर और"इन-विटरों" प्रणाली में प्रकाशित अध्ययनों की समीक्षा पर आधारित हैं।

पहली समीक्षा से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि रेडियो फ्रीक्वेंसी इलैक्ट्रोमेगनेटिक फील्ड (ईएमएफ) से शारीरिक (बायोलोजिकल) नुकसान हो सकता है और इससे स्पर्म-काउंट में कमी, एनजाइमेटिक और हारमोनल परिवर्तन, डी0एन0ए0 क्षति और अपोपटोसिस फारमेशन जैसे कई परिवर्तन होते हैं।

दूसरी समीक्षा में यह निष्कर्ष निकाला गया कि मोबाइल फोन और घरेलू स्तर पर माइक्रोवेव ओवन के नियमित और दीर्घकालिक प्रयोग से शरीर पर विशेष रुप से मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

तथापि, अभी तक ऐसा कोई निश्चित साक्ष्य उपलब्ध नहीं हुआ है जिससे यह सिद्ध हो सके कि मोबाइल फोन अथवा सैल टावर से होने वाले इलेक्ट्रोमेगनेटिक फील्ड (ईएमएफ) विकिरणन का मनुष्य के स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। विशेष रुप से सैल फोन का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों के संबंध में निश्चित साक्ष्य नहीं मिला है कि इन विकिरणनों का ह्रदय, मस्तिष्क और शरीर के अन्य हिस्सों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सेल फोन के प्रयोग से होने वाले रेडियो फ्रीक्वेंसी इलेक्ट्रोमेगनेटिक फील्ड (ईएमएफ) के स्वास्थ्य पर होने वाले प्रतिकूल प्रभावों के बारे में अध्ययन किए जा रहे हैं।

दूरसंचार विभाग द्वारा ईएमएफ विकिरणन मामलों के संबंध में गठित अंतर-मंत्रालीय समिति की सिफारिश के आधार पर भारत में रेडियो फ्रीक्वेंसी फील्ड (बेस स्टेशन उत्सर्जन) की विकिरणन सीमा को घटाकर 01.09.2012 से अंतर्राष्ट्रीय गैर-आयनीकरण विकिरण संरक्षण आयोग (आईसीएनआईआरपी) द्वारा निर्धारित मौजूदा सुरक्षित सीमा का 1/10 वां भाग कर दिया गया है। मोबाइल हैण्डसेट की विशिष्ट अवशोषण दर (एसएआर) को दिनांक 01.09.2013 से घटाकर आईसीएनआईआरपी द्वारा निर्धारित 2 वाट/किलो की बजाए औसतन एक ग्राम मानव उत्तक पर 1.6 वाट/किलो किया गया है।

इसके अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड (एसईआरबी) ने सितंबर, 2013 में एक विशेषज्ञ समिति/कार्य बल का गठन किया है जो मोबाइल टावरों और हैण्डसेटों से होने वाले विकिरणन एक्सपोजर का जीवन पर (मानव,जीवित आर्गनिज्म, वनस्पति व जीव-जन्तु और पर्यावरण) संभावित प्रभाव संबंधी अनुसंधान और विकास प्रस्तावों और अन्य पहलों का मूल्यांकन करेगी।

इसके अलावा, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद सेल फोन से होने वाले रेडियो फ्रीक्वेंसी विकिरणन यदि कोई हो, का भारतीय जनसंख्या के वयस्क व्यक्तियों पर होने वाले प्रतिकूल प्रभाव का पता लगाने के लिए दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में बहु-विषयक"कोहार्ट" अध्ययन भी कर रही है।

****

भारत सरकार
संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
दूरसंचार विभाग

राज्य सभा
तारांकित प्रश्न सं0 26
उत्तर देने की तारीख - 06 दिसंबर, 2013

मोबाइल-फोन से होने वाले विकिरणन के प्रभाव के संबंध में जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय द्वारा किये गये अध्ययनों संबंधी प्रतिवेदन

***26. श्रीमती वसन्ती स्टान्ली :**

क्या संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय अध्ययन संबंधी अपने एक प्रतिवेदन में इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि मोबाइल फोन से होने वाले विकिरणन के लिए कोई रक्षोपाय न होने के कारण देश के मोबाइल फोन उपभोक्ताओं के लिए खतरा बना हुआ है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ख) क्या मोबाइल फोन का लगातार उपयोग करने से प्रयोक्ता के हृदय; मस्तिष्क और शरीर के अन्य कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है ; और
(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इस संबंध में क्या कार्रवाई की गई है ?

उत्तर

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी और विधि एवं न्याय मंत्री (श्री कपिल सिब्बल)

(क) से (ग): एक विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है।

जारी...2/-